27 / 10 / 81 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

दीपकों के मालिक से मिलन मना रहने का अनुभव

➢➢ चैतन्य दीपक की स्थिति का अनुभव

➳ _ ➳ मैं आत्मा एकांत में बैठ रही हूँ

→ व्यर्थ संकल्पों की बहती हुई बाढ़ से किनारा कर रही हूँ

→ मन के अंतर्द्वार खोलकर अन्दर प्रवेश करती हूँ

→ चारों ओर अंधेरा ही अंधेरा

→ मैं आत्मा अंतर्मन की गहराईयों में प्रवेश करती हूँ

→ मन ही मन मैं अपने दिलाराम बाबा को याद करती हूँ

→ ज्ञानसूर्य शिव पिया के ज्ञान रत्नों की बरसात मुझ पर हो रही है

■ कितनी सौभाग्यशाली हूँ मैं

■ एक अलौकिक रूहानी मस्ती मुझ आत्मा में भरने लगी है

■ परमधाम से मेरे ज्ञानसूर्य शिव बाबा के ज्ञान की रंग बिरंगी किरणों की बारिश मेरे अंग अंग को शीतल बना रही है

■ कर्मेंद्रियां शांन्त और स्थिर हो रही है

→ शरीर की सारी चेतनता सिमट कर भृकुटि पर एकाग्र हो रही है

→ शरीर रूपी गुफा में जगता हुआ एक चैतन्य दीपक स्पष्ट दिखाई देने लगा है

→ इस चैतन्य दीपक को मैं मन बुद्धि रूपी नेत्रों से देख रही हूँ

➳ _ ➳ मीठे बाबा इस दीपक में ज्ञान का घृत डालते हैं

■ ज्ञान के घृत से टिमटिमाता हुआ दिया जगमगाता हुआ जलने लगता है

→ ये जगमगाता हुआ चैतन्य दीपक मैं आत्मा हूँ

■ अब मुझ आत्मा के अंतर्मन में कोई भी किचड़ा नहीं है

➳ _ ➳ इस चैतन्य दीपक से सातों गुणों की सतरंगी किरणें आ रहे है

→ ये किरणे धीरे-धीरे चारो और फैलने लगी है

➳ _ ➳ परमधाम से मेरे ज्ञानसूर्य निराकार बाबा से सर्वगुणों की सतरंगी किरणे अब सीधे मुझ आत्मा रूपी दीपक पर पड़ रही है

■ मुझ आत्मा से निकल रही सतरंगी किरणें अब और भी दूर-दूर तक फैल रहा है

→ चारों और एक सुन्दर औरा निर्मित हो गया है

→ मन को गहन सुख, शांति की अनुभूति करवा रहा है

➢➢ चैतन्य दीपक परमात्मा के छत्रछाया में रहने का अनुभव

➳ _ ➳ अब मैं आत्मा धीरे - धीरे अपनी साकार देह को छोड़ ऊपर की ओर जा रही हूँ

→ मैं पहुँच गई चैतन्य दीपक के पास परमधाम घर में

→ शक्तिशाली किरणों रूपी छत्रछाया के नीचे स्थित हो जाती हूँ

➳ _ ➳ वापिस जा रही हूँ साकार लोक में

→ और भी बड़ा और शक्तिशाली औरे के साथ अब मैं चैतन्य दीपक प्रवेश करती हूँ ब्राहमण तन में

■ मुझ चैतन्य दीपक से चारों ओर शुभभावना शुभकामना की तरंगें फैंल रहा है।

■ 'धनवान भव' की स्थिति का आह्वान कर सदा दीपमाला बनाते रहते है